उत्पीड़ित जनता का लाड़ला, शस्त्रास्त्र निर्माता, साहसिक शहरी गुरिल्ला व आदर्श कम्युनिस्ट

कामरेड दासारपु कनकास्वामी को लाल–लाल सलाम!

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

कामरेड दासारपु कनकास्वामी का पार्थिव देह

दृढ़ संकल्प रखो, कुरबानियों से न डरो और हर तरह की कठिनाइयों को दूर करते हुए विजय प्राप्त करो!

– *माओ त्सेतुङ*

उत्पीड़ित जनता का लाड़ला, शस्त्रास्त्र निर्माता, साहसिक शहरी गुरिल्ला व आदर्श कम्युनिस्ट कामरेड दासारपु कनकास्वामी को लाल–लाल सलाम!

24 सितम्बर 2012 की सुबह 9.10 बजे के आसपास उत्पीड़ित व शोषित जनता के सपूत कामरेड दासारपु कनकास्वामी (उर्फ बाबजी और अमन) का देहांत हुआ। फैल्सिपेरम मलेरिया से जुझते हुए, उच्च रक्तचाप की समस्या भी बढ़ने की वजह से उनकी दुखद मौत हुई। उन्हें बचाने के लिए साथियों और जनता के द्वारा की गई तमाम कोशिशें विफल रहीं। उनकी इच्छा थी कि शहरों की भूमिगत जिन्दगी में गुमनाम मौत नहीं मरनी चाहिए। पीएलजीए के सह–योद्धाओं और जनता के बीच मरने की अपनी तमन्ना को पूरा करते हुए, वह हम सबको गम में डुबोते हुए विदा ले गए। लगभग तीन दशकों से क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए काम करने वाले कामरेड अमन को खोना पार्टी व आन्दोलन के लिए बहुत बड़ी क्षति है। उनकी शहादत से आन्दोलन ने एक निपुण व अनुभवी कम्युनिस्ट तकनीशियन को खोया है। कामरेड अमन क्रांतिकारी आन्दोलन तथा जनता के लिए और कई सालों तक अपनी सेवाएं दे सकते थे। उनकी असमय मौत से पार्टी कतारें और जनता गमगीन हो गई। आइए, उनके अधूरे सपनों को पूरा करने की शपथ लें और उनके आदर्शों को आत्मसात करें व उनसे प्रेरणा लें।

क्रांति का गढ़ वरंगल जिले में ढला बचपन

कामरेड अमन का जन्म तेलंगाना क्षेत्र के वरंगल जिला के मद्दूरु मण्डल, कूटिगल गांव के एक गरीब किसान परिवार में 26 जुलाई 1969 को हुआ था। मां लक्ष्मम्मा और पिता ईदय्या के दो बेटों में कामरेड अमन छोटे थे। उन्होंने बचपन से शोषण व उत्पीड़न के बीच जीवन यापन कर रहे गरीबों को देखा था। वह सूखा इलाका होने की वजह से खेती वर्षा पर निर्भर थी। बारिश नहीं होने से भुखमरी का सामना करना पड़ता था।

इस इलाके में 1940 के दशक के आखिर में महान सशस्त्र तेलंगाना किसान आन्दोलन चला था। उस आन्दोलन की विरासत प्राप्त नई पीढ़ी को नक्सलबाड़ी व श्रीकाकुलम आन्दोलनों ने जगाया था। इन आन्दोलनों के तात्कालिक रूप से पीछे हटने के कुछ समय बाद दोबारा 'जगित्याला जैत्रयात्रा'

के नाम से प्रसिद्ध किसान आन्दोलन ने यहां के गांवों को झकझोरा था। उस समय छात्रों व नौजवानों ने 'गांवों की ओर चलो' अभियानों के द्वारा ग्रामीण इलाकों में क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार करते हुए किसानों को संगठित किया। उस दौरान कालेजों व स्कूलों में रैडिकल छात्र संगठन बनकर काम रहा था। उसी समय धूलिमेट्टा हास्टल व स्कूल में भी रैडिकल छात्र संगठन (आरएसयू) बना था। कामरेड कनकास्वामी का क्रांतिकारी राजनीति से परिचय धूलिमेट्टा हस्टल से हुआ था। उन्होंने हास्टल में रहते हुए 7वीं कक्षा तक पढ़ाई की। 1983 में रैडिकल छात्र संगठन में शामिल हो गए।

धूलिमेट्टा स्कूल जहां सैकड़ों छात्र पढ़ते थे, रैडिकल छात्र संगठन के लिए एक मजबूत केन्द्र की तरह था। उस दौरान इसे 'रैडिकल क़िला' के रूप में देखते थे। हर साल स्कूल में होने वाले छात्र संगठन के चुनावों में रैडिकलों का पैनल ही जीतता था। हास्टल की सुविधाओं के लिए और पाठ्य पुस्तकों, खेल सामाग्रियों के साथ गणित व इंग्लिश के शिक्षकों की नियुक्ति आदि मांगों को लेकर दो सप्ताहों तक स्कूल का बहिष्कार किया गया था। यह आन्दोलन आसपास के सभी गांवों – आकनूर, लद्दुनूर, मद्दुनूर, चेर्याल, नर्मेट्टा, तरिगोप्पुला, बच्चन्नापेटा, बैरानपल्ली आदि स्कूलों में पढ़ रहे छात्रों को प्रभावित किया था। गांव में भूस्वामियों व राजनीतिक नेताओं के शोषण और अत्याचारों को पहले से सहन न कर पाने वाले कनकास्वामी पार्टी से परिचय होने के बाद पढ़ाई से ज्यादा क्रांतिकारी आन्दोलन को ही प्राथमिकता देने लगे थे। स्कूल में बंद, बहिष्कारों के मौके पर सीधे कक्षाओं में जाकर छात्रों को कक्षाएं बहिष्कार करने के लिए कहते थे और उन कार्यक्रमों को सफल बनाने में हमेशा आगे रहते थे।

हास्टल में अधीक्षक द्वारा किए जा रहे भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करते हुए प्रत्येक छात्र को मंजूर कोटा के आधार पर राशन व अन्य सुविधाएं देने की मांग को लेकर चले आन्दोलन में कामरेड कनकास्वामी ने भाग लिया था। 1990 तक धूलिमेट्टा हास्टल ने आसपास के 20–25 गांवों में क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार करने वाले केन्द्र के रूप में काम किया था। यहां के छात्र रोज अनेक टीमों में बंटकर 'क्रांति', 'रैडिकल मार्च', 'कार्मिक पथ' आदि क्रांतिकारी पत्रिकाएं और पर्चे बांटना, पोस्टर चस्पा करना, दीवार लेखन आदि कार्यक्रमों में भाग लेते थे। इसके अलावा यहां के छात्रों ने शराबबंदी और सामंतवाद–विरोधी आन्दोलनों में भी भाग लिया था। कामरेड कनकास्वामी भी 1984 तक इस तरह के सभी कार्यक्रमों में बराबर भाग लेते रहे। इसलिए धूलिमेट्टा गांव के भाजपा व टीडीपी पार्टियों से संबंधित भूस्वामी पुलिस के द्वारा हफ्ते में एक बार इस हास्टल पर हमला करवाते थे। इसलिए पुलिस के सामने एक्सपोज हुए छात्र रात को

हास्टल में न सोकर कहीं अन्य जगहों में जाकर सोते थे। कामरेड कनकास्वामी भी खेतों में कुंओं के पास, जंगल में या परिचतों के घरों में जाकर सोते थे। कामरेड कनकास्वामी गांव में अपने साथी नौजवानों को भूस्वामियों व राजनीतिक नेताओं के शोषण और अत्याचारों का विरोध करना सिखाते थे। साथ ही, वह जन–विरोधियों का सामना होने पर उनको नमस्कार करना, उठकर खड़े होना कभी नहीं करते थे। अपने साथ बच्चों और छात्रों को लेकर क्रांतिकारी गीतों को गाना और ढपली बजाना सिखाते थे। इस वजह से बच्चे ही नहीं, बड़े भी कामरेड कनकास्वामी के साथ सम्मान से पेश आते थे। उनको बुलाकर उन्हें क्रांतिकारी गीत गाने को कहते थे।

कामरेड कनकास्वामी ने पढ़ाई के समय से ही आसपास के गांवों में चल रहे क्रांतिकारी किसान आन्दोलनों से प्रेरणा ग्रहण की थी। 1984 में पार्टी ने छात्रों से 'गांवों की ओर चलो' का आह्वान दिया था। इस अभियान में भाग लेकर क्रांतिकारी गीतों के द्वारा नव जनवादी क्रांति की राजनीति को गांवों में प्रचार किया। सहज तौर पर उन्हें सामंती व्यवस्था से नफरत विरासत में मिली थी। इस पृष्ठभूमि में पले–बढ़े होने के कारण कामरेड कनकास्वामी के अन्दर छात्र संगठन कार्यकर्ता के तौर पर काम करने के दौरान ही यह धारणा बनी थी कि क्रांतिकारी आन्दोलन ही देश की मुक्ति और सच्ची स्वतंत्रता का एक मात्र रास्ता है। क्रांतिकारी आन्दोलन में सक्रिय रूप से काम कर रहे अपने साथी छात्रों और आर्गनाइजरों से प्रेरणा लेकर कम उम्र में ही घर त्यागने के लिए तैयार हो गए। इस तरह वह 1984 में जब मात्र 15 साल के थे, पूर्णकालीन कार्यकर्ता के तौर पर पार्टी में भर्ती हो गए। यह वह दौर था जब उनके जैसे कई नौजवान और किशोर क्रांतिकारी बन रहे थे।

किसान संघर्षों की धरती से अंकुरित लाल पौधा

वरंगल जिला में बैरानपल्ली, बेक्कल, कूटिगल, सोलीपुरम, कोण्डापुरम, आंक्षापुरम, दोरनाल, तरीगोप्पुल, पोतारम, अब्बापुरम, वंगापल्ली, धूलिमेट्टा आदि गांवों के किसान जमीन संघर्षों, मजदूरी बढ़ाने के संघर्षों में उतरने लगे थे। इसके परिणामस्वरूप गांवों में किसान–मजदूर संगठन मजबूत होने लगा था। 1981 से '83 के बीच भूस्वामियों के विरुद्ध जनगांव इलाके में उठे संघर्ष का प्रभाव नौजवानों पर पड़ा था। इन संघर्षों से सैकड़ों एकड़ भूस्वामियों की जमीनों को छीनकर दलितों में बांटा गया था। वेतन बढ़ाने, मजदूरी बढ़ाने की मांग करते हुए नौकरों, मजदूरों ने जुझारू आन्दोलन किए थे। गांवों में सूदखोरी व व्यापारियों की लूटखसोट के खिलाफ आन्दोलन चले थे। फसलों के उचित दाम

की मांग करते हुए सब डिवीजन भर में आन्दोलन चला था। अकाल प्रभावित इलाका घोषित करने की मांग को लेकर हजारों की संख्या में जनता ने प्रदर्शन किया था। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप सरकार ने 1982 में इस इलाको को अकालग्रस्त क्षेत्र घोषित किया था। गोदावरी नदी से पानी देने और सिंचाई योजनाओं की मांग को लेकर चेर्याल में बड़ी रैली निकाली गई थी। इस रैली में उस इलाके के सैकड़ों गांवों की जनता हजारों की संख्या में शामिल हुई थी। हालांकि रैली के लिए पहले सरकार ने अनुमति दी थी, लेकिन बाद में लाठीचार्ज करवाया और सैकड़ों लोगों को गिरफ्तार किया। इस रैली में भाग लेकर कामरेड कनकास्वामी ने लुटेरी सरकार के जनविरोधी स्वभाव को प्रत्यक्ष देखा था।

धूलिमेट्टा के पड़ोसी गांव बैरानपल्ली का तेलंगाना सशस्त्र संघर्ष के दौरान निजाम के सिपाहियों को मार भगाने का गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। इस गांव पर हमला करने के लिए आए रज़ाकारों का जनता ने दो बार प्रतिरोध किया था। तीसरी बार, यानी 1948 में नेहरू सेना के प्रवेश के कुछ समय पहले रजाकारों ने यहां हमला करके 87 लोंगो को मौत के घाट उतार दिया था। तेलंगाना सशस्त्र संघर्ष में खून बहाने वाली बैरानपल्ली की वीर जनता की याद में 1982 में स्मारक का निर्माण किया गया। इस संदर्भ में आयोजित सभा में हजारों जनता ने भाग लिया था। इस अवसर पर किशोर कनकास्वामी ने भी अपने दोस्तों को लेकर प्रचार टीमों के साथ गीत गाते हुए सभा को सफल बनाने का प्रचार किया था।

कामरेड कनकास्वामी ने 1984 से क्रातिकारी आन्दोलन का हिस्सा बनकर 2012 में अपनी शहादत तक कई जिम्मेदारियों को निभाया। बाबजी, अमन आदि नामों से क्रांतिकारी गतिविधियों में अपने हिस्से की भूमिका निभाई। 1984 के मध्य से 1985 तक नरसमपेट केन्द्र में आर्गनाइजर (शहीद पैण्ड्ला वेंकटरमन – गांव कड़वेंडी) के गार्ड के तौर पर काम किया। उसके बाद हैदराबाद में मजदूरी करते हुए कुरियर का काम किया। बाद में उन्होंने पार्टी की जरूरतों के लिए तकनीकी क्षेत्र में कदम रखा और हथियार तैयार करने में निपुणता हासिल की। सैकड़ों बंदूकें, हजारों हथगोले तैयार करने वाली यूनिट का हिस्सा बनकर उन्होंने विभिन्न जिम्मेदारियां निभाईं।

दुश्मन की आंखों में धूल झोंकने वाला चतुर कुरियर

1985 के बाद उन्होंने वरंगल जिला कमेटी के तत्कालीन सचिव शहीद कामरेड पुलि अंजन्ना के कुरियर के रूप में काम किया। बहुत ही महत्वपूर्ण जिम्मेदारी उठाकर दुश्मन के आखों में धूल झोंकते हुए जिला व राज्य कमेटियों

के बीच तालमेल में उन्होंने एक पुल की तरह काम किया। कुछ समय वरंगल शहर आर्गनाइजर शहीद कामरेड रामकृष्ण के कुरियर के रूप में भी काम किया। उस दौरान स्थिति ऐसी थी कि कुछ घण्टे पहले मिलकर साथ चाय पीकर अलग होने वाले साथी अगले कुछ घण्टों के अंदर ही पुलिस की फर्जी मुठभेड़ों में सड़क पर शवों में बदलने का दृश्य आम था। पुलिस ने शहरी आर्गनाइजर कामरेड्स रामकृष्ण, याकय्या और नागेश्वरराव को पकड़कर फर्जी मुठभेड़ में हत्या करके लाशों को हन्टर रोड पर फेंक दिया था। उन्हें मिलने के लिए रखे अपाइंटमेंट में जा रहे कामरेड अमन ने रास्ते में उनके शवों को देख लिया। पास जाकर उन्हें पहचाना और तुरंत ही अखबारों के लिए बयान जारी किया था। उस समय उन्होंने बड़ी सूझबूझ और दृढ़ता के साथ काम किया था। कामरेड अमन राज्य कमेटी के कुरियर के रूप में शहीद कामरेड्स दामोदर, शाखामूरी अप्पाराव, पटेल सुधाकर जैसे वरिष्ठ कामरेडों के साथ मिलकर भी काम किया था। अपने साथियों की गिरफ्तारी की खबर पाते ही उन्हें जो डेन मालूम थे उनको कुछ ही घण्टों में खाली करके कारतूस, बंदूकें सुरक्षित प्रदेशों में पहुंचाते थे। कुरियर का काम करने के दौरान वह कई बार शत्रु द्वारा रचे गए चक्रव्यूहों के बीच से कुशलता से बच निकले थे। कामरेड पुलि अंजन्ना शहीद होने के बाद उन्होंने कुछ समय आन्ध्रप्रदेश राज्य कमेटी सचिव कामरेड महेश (संतोष रेड्डी) के कुरियर के तौर पर काम किया। उनके साथ नल्लामल्ला गुरिल्लाजोन परिप्रेक्ष्य वाले एरिया में रवाना हुए। बचपन में किसी दुर्घटना से उनकी बाईं आंख में एक परत बनी थी जिसकी वजह से रात को चलने में दिक्कत होती थी। इसके बारे में मालूम होने पर दस्ते में काम करने लायक नहीं है बताकर वापस भेज देंगे, इस डर से उन्होंने अपनी समस्या का आभास किसी को होने नहीं दिया था। आखिर में कामरेड महेश को उनकी समस्या समझ में आ गई। उसके बाद पार्टी ने उन्हें शहर में काम करने के लिए भेज दिया।

एक अज्ञात योद्धा जो
जनयुद्ध के मैदान में शस्त्रास्त्र पहुंचाते रहे

1995 से 2007 तक कामरेड अमन ने पार्टी के केन्द्रीय तकनीकी क्षेत्र में काम किया। विभिन्न राज्यों में गोपनीय तौर पर रहते हुए गुरिल्ला दस्तों के लिए हथियार, हथगोले आदि तैयार करके पंहुचाने की जिम्मेदारी को बखूबी निभाया। अपनी टीम के साथ बड़ी मेहतन से तैयार किए हजारों हथगोलों, सैकड़ों हथियारों को नल्लामल्ला व दक्षिण तेलंगाना इलाकों में विभिन्न जगहों में पंहुचाने में उनकी प्रमुख भूमिका रही। तकनीकी विभाग का हिस्सा बनकर शहरों में रहते

हुए काम करने के दौरान आई कई कठिनाइयों का दृढ़ता के साथ सामना करते हुए वह एक अच्छे तकनीशियन के रूप में उभरे थे। गुरिल्ला युद्ध को आगे बढ़ाने के लिए जरूरी हथियारों और अन्य सामाग्रियों को तैयार करने में दिन–रात काम करते हुए अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाई। हथियारों को साइकिल में बांधकर पुलिस थानों के आगे से भी बिना किसी भय व घबराहट के सुरक्षित प्रदेशों में, जंगली इलाकों में चले जाते थे।

एक बहादुर गुरिल्ला जिसने क्रूर पुलिस अधिकारियों व जन दुश्मनों का सफाया किया

1993 में हैदराबाद के एक क्रूर पुलिस अधिकारी डीआइजी के.एस. व्यास का सफाया करने की कार्रवाई में कामरेड अमन ने अपने हिस्से की भूमिका निभाई। उसके बाद उसी शहर के बीचोंबीच विधायक सुधीरकुमार को बंदी बनाकर पार्टी नेतृत्व को दुश्मन की गिरफ्त से छुड़ाने में भी उनकी भूमिका रही।

हैदराबाद में मजदूरों की झुग्गी बस्तियों में अलग्जेंडर जैसे पूंजीपतियों के चमचे और गुण्डे मजदूरों, जनता और महिलाओं पर अकथनीय जुल्म करते थे। वहां की पार्टी ने ऐसे कुछ बदमाशों को चुनकर खत्म कर दिया। कामरेड अमन ने उस एक्शन टीम के सदस्य के तौर पर सक्रिय भागीदारी निभाकर साहस का प्रदर्शन किया।

एक अदम्य योद्धा जो दुश्मन के कैद में दृढ़ता से डटे रहे

2007 शुरूआत में ओड़िशा राज्य के राउरकेला शहर में आन्ध्रप्रदेश स्पेशल इंटलिजेन्स ब्यूरो के पुलिस दल ने पार्टी द्वारा संचालित तकनीकी विभाग की एक टीम को गिरफ्तार किया। इस सिलसिले में कामरेड अमन और उनकी जीवनसाथी समेत कुछ अन्य महत्वपूर्ण साथी दुश्मन के हाथों पकड़े गए थे। पुलिस द्वारा केन्द्रीय नेतृत्व के लिए उन्हें कितनी यातनाएं देने पर भी वह एक ही बात 'मुझे कुछ नहीं मालूम' पर दृढ़ता से खड़े रहे। कई शारीरिक व मानसिक यातनाओं को सहकर उन्होंने पार्टी की गोपनीयता की रक्षा की। शत्रु दमन के बीच, पुलिस हिरासत में और जेल जिन्दगी में उन्होंने दुश्मन की साजिशों व प्रलोभनों के आगे अपना सर कभी नहीं झुकाया। वह जेल में लगभग ढाई साल तक रहे। जेल में भी कामरेड अमन ने एक अनुशासित पार्टी सदस्य के तौर पर जेल कम्यून के सभी कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया। आम कैदियों का समर्थन जुटाने में अपने कर्तव्यों को पालन किया। जेल के अन्दर जारी भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष छेड़ने में उन्होंने अपनी भूमिका निभाई। जब वह जेल में थे, लंबे समय के बाद अपने परिवार जनों से मिलने पर भी वह वर्गीय संबंध को

प्राथमिकता देते हुए जनता के पक्ष में दृढ़ता से खड़े रहे। जमानत पर रिहा होने के बाद बिना कोई हिचकिचाहट के दण्डकारण्य आन्दोलन का हिस्सा बन गए। दुश्मन की कैद में उनका व्यवहार सभी क्रांतिकारियों के लिए आदर्श है।

चेतना का प्रवाह जो 'लाल' और 'निपुण' का संगम है

2007 में सम्पन्न पार्टी की एकता कांग्रेस–9वीं कांग्रेस द्वारा निर्देशित केन्द्रीय कार्यभार बिहार–झारखण्ड और दण्डकारण्य को आधार इलाकों के रूप में विकसित करना है। इसके तहत गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में तथा जनमुक्ति छापामार सेना को जनमुक्ति सेना में तब्दील करने के कर्तव्य को लेकर चल रहे जनयुद्ध की जरूरतों को पूरा करने के लिए अपनी अस्वस्थता की जरा भी परवाह किए बगैर कामरेड अमन ने अविश्राम काम किया। 2009 के मध्य से सितम्बर 2012 तक यानी तीन सालों तक दण्डकारण्य तकनीकी विभाग का हिस्सा बनकर उन्होंने हथियार तैयार करने में सक्रिय तौर पर भाग लिया। इस दौरान कई कार्यकर्ताओं को उन्होंने तकनीकी बारीकियां सिखाईं।

पार्टी की जरूरत के मुताबिक अप्रैल 1995 में तकनीकी विभाग में आने के बाद कामरेड अमन ने अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाने के लिए जरूरी सभी तकनीकों को जिद के साथ सीखने का प्रयास किया। तबसे लेकर अपनी शहादत तक कामरेड अमन ने तकनीकी विभाग के विकास में मुख्य हिस्सा बनकर काम किया। एक ओर प्रधान उत्पादन क्षेत्र, दूसरी तरफ विकास का काम, दोनों में सक्रिय भूमिका निभाकर तकनीकी क्षेत्र का विकास करने में मुख्य भूमिका निभाई। इस दौरान वह जिला/डिवीजन कमेटी स्तर तक विकसित हुए थे।

तकनीकी विभाग में आने से पहले, कॉ. पुलि अंजन्ना के कुरियर के रूप में काम करने के दौरान ही खरीदे गए हथियारों को रिसीव करके संबंधित स्टोरों में भेजना, स्टोर की देखरेख करना, उन्हें फील्ड तक पहुंचाना आदि कामों को वह बड़ी होशियारी से करते थे। उस दौरान महानगरों में भी सभी तरह के वाहनों को चलाने में कुशलता हासिल की। यह अनुभव उनके लिए तकनीकी विभाग में उपयोगी साबित हुआ और इससे उनका काम आसान भी हुआ। कुछ मौकों पर मजदूर क्षेत्र में काम करना उनकी क्रांतिकारी जिन्दगी में आए उतार–चढ़ावों में काम आया। कॉ. पुलि अंजन्ना शहीद होने के बाद कॉ. अमन का पार्टी से सम्पर्क टूट गया था। हाथ में फूटी कौड़ी भी नहीं थी। ऐसी परिस्थिति में, गुजारा करने में हो रही परेशानियों का सामना करते हुए उन्होंने दवाइयों की दुकानों, किराना दुकानों में काम करते हुए पार्टी से सम्पर्क करने का प्रयास किया। उस दौरान हैदराबाद की तारनाका कालोनी में दूध फैक्टरी में मजदूरी भी की। मजदूर के

रूप में वहां के मजदूरों के साथ दोस्ती करके उन्हें क्रांतिकारी राजनीति से अवगत कराकर एक अच्छे संगठक भी बने थे। उस समय की मजदूर जिन्दगी बाद में तकनीकी क्षेत्र में काम करने के दौरान बेहद उपयोगी साबित हुई।

कामरेड अमन की एक आंख शुरू से कमजोर थी। आखिर तक वह इस समस्या का सामना करते रहे। डॉक्टरों ने बताया था कि इसका इलाज ऑपरेशन से भी नहीं हो सकता। अत्याधुनिक तकनीकों से भरे तकनीकी विभाग में माइक्रान्स के हिसाब से सही नाप के आधार पर काम किया जाता है। कामरेड अमन ने आंख की समस्या की परवाह किए बगैर कामों को सीखने के लिए जिद के साथ प्रयास किया। माइक्रोमीटर, वेर्नियर, हाईटगेज, डेप्तगेज जैसे कई नाजुक औजारों के साथ काम करने में निपुणता हासिल करने के लिए सर्वहारा पुत्र कामरेड अमन ने अनवरत प्रयास किया।

तकनीकी क्षेत्र में कामरेड अमन ने जब कदम रखा था, उस दौरान 12 बोर पीपी, एमएन–4 जैसे हथियारों के ही नमूना थे। प्रत्येक हथियार के निर्माण में कटिंग, फाइलिंग जैसे हाथ से होने वाले कामों के अलावा बट, पिस्टल ग्रिप जैसे लकड़ी के कामों को करना पड़ता है। इसके अलावा कई तरह के स्प्रिंग तैयार करना, ब्रेजिंग, सोर्जिंग जैसी जरूरी तकनीकों को भी सीखने के लिए उन्होंने पूरा मन लगाकर काम किया। इसके अलावा लेथ मशीन, मिल्लिंग मशीन आदि पर हुनरमंदी के साथ काम करना पड़ता है जोकि हथियारों के उत्पादन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। कामरेड अमन ने 1995 में ही लेथ सम्बन्धी कामों में शामिल होकर विभिन्न प्रकार के पुर्जों और औजारों को बनाना सीख लिया। 2007 में राउरकेला में गिरफ्तार होने तक वह लेथ और मिल्लिंग मशीनों पर कामों को संचालित करने वाले प्रमुख नेतृत्वकारी कामरेड के रूप में विकसित हुए थे। ये काम दूसरों को सिखाने में भी वह दक्ष बने थे।

वर्कशापों में विभिन्न तकनीकों के आधार पर तैयार किए गए विभिन्न पुर्जों को जोड़कर हथियार का रूप देना उस क्षेत्र का एक प्रमुख विभाग है। कामरेड अमन ने लगन और मेहनत के साथ काम करके विभिन्न प्रकार के पुर्जों को जोड़ने में निपुणता हासिल की। जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने दण्डकारण्य के पश्चिम रीजयन तकनीकी विभाग की जिम्मेदारी संभाली।

हथियार उत्पादन में निपुणता हासिल करने के लिए बड़ी मेहनत और लगन के साथ काम को एक क्रमबद्ध तरीके से अध्ययन करना, किताबों को पढ़ना, नेतृत्वकारी कामरेडों के साथ चर्चाएं करना, अपने विचारों व मतों को यूनिट की मीटिंगों में रख़कर विकास लाने की कोशिश करना आवश्यक हैं। कामरेड अमन ने इसी पद्धति का अनुसरण कर खुद को विकसित किया। पार्टी के कामों के लिए

आवश्यक विभिन्न प्रकार के तकनीकी ज्ञान को अर्जित करने के लिए उन्होंने प्राइवेट वर्कशापों में कामगार की तरह भी काम किया। वहां खुद सीखकर वो काम साथी कामरेडों को सिखाया करते थे।

वह हथियारों से संबंधित किताबों, उनके अंदर के ड्राइंग्स, चित्रों को देखकर उनकी बनावट को, एक पुर्जे का दूसरे पुर्जे से संबंध को समझने की कोशिश करते थे। नेतृत्व के साथ चर्चा करके अपना ज्ञान बढ़ा लेते थे। सिर्फ काम सीखना ही नहीं, बल्कि उसमें निपुणता हासिल करने की भी वह लगातार कोशिश करते थे। कोई भी नया नमूना आने पर उसे बार–बार खोलना, सेट करना और उस पर समझदारी बनाने के लिए चर्चा करना, बार–बार परखना आदि करते थे। अंग्रेजी पढ़कर समझने में उनकी जो सीमितता थी उसे नजर में रखकर वह अपनी जीवनसाथी को अंग्रेजी सीखने के लिए प्रोत्साहित करते थे। और उनके सहारे वह खुद समझने की कोशिश करते थे। इस तरह वह अपने कामों में प्रगति लाने का लगातार प्रयास करते थे।

साधारण तौर पर कामों में प्रगति लानी है तो उत्पादन काम से अलग लगातार नए कामों को ही करना होता है। उन्होंने विकास कामों को आसान करने का प्रयास किया। इन कामों में हो सकने वाली दुर्घटनाओं की भी परवाह किए बिना उन्हें संचालित करने में आगे रहते थे। प्रेस काम करने के दौरान उनके हाथ की तीन उंगलियां पिस गई थीं। और एक हादसे में हाथ जल गए थे। एक और हादसे में लोहे का एक छोटा टुकड़ा तेज गति से आकर लगने से आगे का दांत टूट गया। उसके बावजूद हादसों से भरे कामों को करने में वह आगे–पीछे नहीं होते थे। इसके अलावा कहीं जरा भी कोई हादसा होने की आशंका रहने से उस काम में ऊपर स्तर के नेतृत्वकारी साथी के भाग लेने का विरोध करते थे और रोकते थे।

विकास कामों को करने के दौरान आमतौर पर तय समय पर काम बंद करना संभव नहीं होता। तय लक्ष्य को पूरा करने के लिए अधिक समय तक काम करना पड़ता है। वैसे कई बार कामरेड अमन आधी–आधी रात तक भी काम करते थे। अपने साथी कामरेडों को समय पालन के बारे में सर्वहारा के दृष्टिकोण से समझाया करते थे। काम में कम्युनिस्ट स्फूर्तिभावना का प्रदर्शन करते थे।

पार्टी द्वारा संचालित राजनीतिक कक्षाओं में विषयों को समझने, सभी के अन्दर एक अच्छी समझदारी बनने के लिए कामरेड अमन अपने अनुभव में आ रही समस्याओं के आधार पर चर्चाएं चलाते थे। वह वरंगल जिले में और हैदराबाद में विभिन्न स्वभाव वाले मजदूरों के साथ मिलकर काम करने के दौरान मिले अनुभवों को बताते थे जिससे सभी कामरेडों को विषयों को गहराई से

समझने में फायदा होता था।

तकनीकी क्षेत्र में नाप, गणना आदि को माइक्रान के हिसाब से रखने की जरूरत को समझने के बाद वह अंदर ही अंदर दुखी होते थे। क्योंकि वह कम उम्र में स्कूल छोड़कर क्रांतिकारी आन्दोलन में आए थे और गणित पर उतना ध्यान नहीं दिया था। साथी कामरेडों के सहयोग से अपने काम की जरूरत के मुताबिक गणित सीखकर अपना ज्ञान बढ़ाने वाले कामरेड अमन की दृढ़ता हम सबके लिए आदर्श है। तकनीकी किताबों का अध्ययन करने के लिए उन्होंने अंग्रेजी भाषा सीखने का भी खूब प्रयास किया।

कामरेड अमन को आंख की समस्या के अलावा रक्तचाप, कमर दर्द जैसी गंभीर शारीरिक समस्यांए थीं। लेकिन उन्होंने कभी उनकी परवाह नहीं की। वह लगातार अध्ययन करते थे। चूंकि तकनीकी क्षेत्र आधुनिक तकनीकों के साथ जुड़ा हुआ विभाग है, इसलिए वर्तमान परिस्थिति में इस काम को दुश्मन के मजबूत केन्द्रों यानी नगरों, शहरों में भी संचालित करना पड़ता है। परन्तु दुश्मन की नजरों से बचकर कामों को संचालित करने की कुशलता हासिल करने से ही हम क्रांति की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम बन सकते हैं। कॉ. पुलि अंजन्ना के मार्गदर्शन में काम शुरू करने वाले कामरेड अमन ने यह कुशलता हासिल की थी। उनके द्वारा हासिल किए ये अनुभव तकनीकी क्षेत्र के लिए बहुत उपयोगी साबित हुए। शहरों में विभिन्न कवरों (आड़) में रहकर कामों को संचालित करने के दौरान कामरेड अमन ने अनेक जगहों पर कई नए कामों को सीख लिया। उन कामों को साथी कामरेडों को सिखाकर हमारे हथियार उत्पादन के कामों को निडर होकर संचालित करने में मुख्य भूमिका निभाई।

कामरेड अमन ने जब तकनीकी क्षेत्र में कदम रखा था तब उसमें महिलाओं को खुली वर्कशापों में काम दिलवाने की समस्या सामने आई थी। महिलाओं को जो काम दिया जा सकता है उसे पहले कामरेड अमन ने सीख लिया ताकि महिला साथियों को काम दिया जा सके। तैयार माल को समेटना, पैकिंग करने जैसे कामों की आड़ में वर्कशापों में महिला कामरेडों का काम करना शुरू हुआ। इस तरह कामरेड अमन ने वर्कशापों में महिलाओं के काम करने की राह में रही बाधा को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसके अलावा कामरेड अमन ने अलग–अलग शहरों में स्थानीय जनता की जरूरतों को पूरा करने योग्य वस्तुओं को तैयार करना सीख लिया। इस तरह बाहर के वर्कशापों में काम सीखने के दौरान मालिकों के द्वारा बताए सभी कामों जैसे शाप की सफाई से लेकर जूठे बर्तन धोने तक को आज्ञाकारी नौकर की तरह किया। इस तरह कामरेड अमन ने तकनीकी विभाग के लिए कई जरूरी

कामों को नौकर के रूप में काम करके सीखा। एक कम्युनिस्ट को अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए चाहे कैसा भी काम क्यों न हो करने में शर्म नहीं होनी चाहिए। उन्होंने अपने व्यवहार में ऐसा करके दिखाया।

कुरियर के रूप में हो या वर्कशाप संचालित करने के दौरान हो, तकनीकी सावधानियों का वह जरूर पालन करते थे। माल तैयार करने में, तैयार माल को भेजने के दौरान किसी न किसी आड़ का ही इस्तेमाल करते थे। स्थानीय रवानगी के दौरान हो या फील्ड में पहुंचाने के दौरान जांच होने पर बेहिचक जवाब देते थे। किसी को कोई संदेह का मौका दिए बिना तैयार माल को तय जगहों पर पंहुचाते थे।

एक ऐसा जन सैनिक जिसने जनता के स्नेह को ही अपना कवच बना लिया

इसी तरह एक बार डम्पों में जमा रुपयों को बैंक में बदलने के दौरान बैंक अधिकारियों ने उन रुपयों को नकली समझकर कामरेड अमन को पुलिस के हवाले कर दिया था। पहले से ऐसी समस्या का सामना होने का अनुमान लगा चुके कामरेड अमन ने बिना किसी घबराहट के बैंक अधिकारियों और पुलिस को दृढ़ता के साथ जवाब दिया। आसपास के लोंगों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार से उनका विश्वास जीतकर उन्हें संकट की स्थिति में समर्थन में दृढ़ता से खड़े होने योग्य बनाया था। अपने मिलनसार स्वभाव की वजह से उनके मन को जीत सके। बाद में पुलिस की जांच में नोट नकली नहीं है यह साबित होने पर समस्या का हल हो गया।

जनता से घनिष्ठ संबंध बनाने पर कामरेड अमन ज्यादा ध्यान देते थे। अपने आसपास की जनता, खासकर पड़ोसियों की वह काफी सहायता करते थे। मुख्य रूप से महिलाओं व वृद्धों की सहायता करने पर ज्यादा ध्यान देते थे। रास्ते चलते समय कोई महिला दो बैग उठाकर बोझ से परेशान हो रही हो तो पहलकदमी के साथ उनका एक बैग लेकर उस महिला की मदद करते थे। शहर में पानी के लिए बहुत मेहनत–मशक्कत करनी पड़ती है। सभी पहले भरने की होड़ में लगे रहते हैं। चूंकि महिलाओं को घरों में काम का दबाव होता है, इसलिए वह लाइन में आखिरी में खड़े होते थे। बूढ़ी महिलाओं का घड़ा उनके घर तक छोड़ आते थे। बाजार जाने के दौरान साथी कामरेड या आसपास के लोग कुछ सामान मंगाने पर जरूर लाकर देते थे। बीमार कामरेडों को जरूरी सहायता देते थे। इस तरह वह अपनी सेवा भावना की वजह से जनता और अपने कामरेडों के प्यारे बने थे।

राउरकेला में किराया मकान मालिक के साथ अपने परिवार जनों सा व्यवहार करने की वजह से वो उन्हें अपने परिवार सदस्य की तरह सम्मान देते थे। उनके मरने पर रिश्तेदार कोई नहीं आए थे क्योंकि उनका विवाह अंतर्जातीय था। उनकी चार लड़कियां ही थीं। ऐसी स्थिति में कामरेड अमन ने ही उस मां के बड़े बेटे की तरह उनकी सहायता की। उस परिवार की लड़कियां भी उन्हें अपने बड़े भैया की तरह मानते थे। पड़ोसियों के साथ भी उनका अच्छा संबंध था। जब उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार किया सभी ने इसका विरोध किया। नक्सलवादी कहने पर पहले किसी को विश्वास नहीं हुआ था। वर्कशाप में मिले हथियारों और पत्रिकाओं को देखने के बाद 'नक्सलवादी इतने अच्छे लोग होते हैं', यह समझकर आसपास के लोगों को सुखद आश्चर्य हुआ।

जेल से रिहा होने के बाद वह अपने साथियों के साथ सीधे दण्डकारण्य में आ गए। जंगली इलाके के आन्दोलन से वह परिचित नहीं थे। कई शारीरिक समस्याओं के अलावा यहां की रोजमर्रा की जिन्दगी में आने वाली अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। इसके लिए उन्होंने अपने अंदर काफी संघर्ष किया। बाहर कारखानों की काम की पद्धतियों और गुरिल्ला जीवन की काम की पद्धतियों के बीच काफी अंतर है। कामरेड अमन इसको समझते हुए अपने अनुभवों से सीखते हुए आगे बढ़ रहे थे।

कामरेड अमन ने अपनी लंबी क्रांतिकारी जिन्दगी में ज्यादा समय शहर में रहकर ही काम किया था। गंदी साम्राज्यवादी संस्कृति के बीच शहरों में रहते हुए जनयुद्ध के लिए अति आवश्यक हथियारों को तैयार करने की जिम्मेदारी को लेकर काम किया था। वहां आने वाली कई समस्याओं का सूझबूझ के साथ हल करते हुए वह कम्युनिस्ट आदर्शों पर दृढ़ता से खड़े रहे। किसी तरह के गलत रुझानों का शिकार न होते हुए उन्होंने लगातार अपने आपको बेहतर बनाया। शहरों में विभिन्न कामों को संचालित करने वाले सभी कामरेडों के लिए अमन एक आदर्श कामरेड हैं।

पार्टी चाहे जो भी जिम्मेदारी उन्हें दे दे, कामरेड अमन उसे पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। हर मुश्किल और हर बाधा को पार कर लेते थे। केन्द्रीय आर्गनाइजर के गार्ड के तौर पर शुरू हुए अपने क्रांतिकारी जीवन में उन्होंने कुरियर, डेनकीपर, जन दुश्मनों को खत्म करने वाली एक्शन टीम के सदस्य के तौर पर, प्रचार के क्षेत्र में आवश्यक पोस्टर, पर्चा पहुंचाने वाले ड्राइवर की तरह, हथियार आर्पूितकर्ता, स्टोरकीपर, हथियार निर्माता के तौर पर काम किया। इस तरह विविधतापूर्ण कार्यों को करने वाले इने–गिने कामरेडों में कामरेड अमन भी एक थे।

आदर्शपूर्ण क्रांतिकारी सहजीवन

कामरेड अमन अपनी जीवनसाथी को सम्मान और बराबरी से देखते थे। उनके विकास के लिए पूरा सहयोग देते थे। वे दोनों एक दूसरे के कामों में हाथ बंटाकर एक दूसरे की सहायता करते थे। चाहे वह वर्कशाप का काम हो या घरेलू काम। घरेलू कामों में ज्यादातर कामरेड अमन खुद जिम्मेदारी लेकर जनवादी तरीके से चलाने का प्रयास करते थे। अपनी इच्छाओं, अनिच्छाओं को अपनी जीवनसाथी पर वह कभी नहीं थोपते थे।

अपनी जीवनसंगनी को सहनशीलता के साथ तकनीकी काम सिखाते थे। काम के अन्दर बारीकियां, सावधानियां बार–बार समझाते हुए कुशलता हासिल करने में उनकी मदद करते थे। अपनी जीवनसाथी से सीखने में एक शिष्य की तरह विनम्रता से पेश आते थे। कामों को जल्दबाजी में न करके धीरे से और सहनशीलता के साथ करने की जरूरत को समझाते थे। जोखिम से भरे मुख्य कामों को दोनों मिलकर आसानी से पूरा करते थे। अचानक कभी गिरफ्तार होने पर दुश्मन के सामने हिम्मत व दृढ़ता के साथ कैसे रहना चाहिए, इस बारे में समझाते थे। उनके सिखाए विषय उनकी जीवनसाथी को राउरकेला गिरफ्तारी के बाद दुश्मन द्वारा दी गई कई तरह की यातनाओं के दौरान दृढ़ता के साथ खड़े रहने में उपयोगी साबित हुए।

अमन के आदर्शों और आशयों को आत्मसात कर लें!

जनता और पार्टी के प्रति अटल विश्वास, अपार प्रेम, व्यक्तिगत अनुशासन, सीधी–सादी जीवनशैली, बोलचाल में सादगी, क्रांति के कर्तव्यों को पूरा करने में चाहे कितनी ही बाधाओं का सामना होने पर भी लक्ष्य को पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्प और धीरज के साथ प्रयास करने का गुण, कर्तव्यों के पालन के लिए आवश्यक कामों को मन लगाकर सीखने का गुण, खुद गंभीर अस्वस्थता का सामना करने के बावजूद साथी कामरेडों के स्वास्थ्य की चिन्ता करना, संवेदनशीलता आदि कम्युनिस्ट मूल्यों को उनसे हम सभी को सीखना चाहिए। ये सब सभी के लिए आदर्श हैं। अमिट मुस्कन उनके चेहरे पर एक अतिरिक्त आकर्षण के रूप में हुआ करती थी।

तकनीकी क्षेत्र के विकास के लिए, क्रांतिकारी आशयों को सफल करने के लिए 28 सालों से अथक काम करने वाले कामरेड अमन को खोना क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए बहुत बड़ी क्षति है। वर्तमान परिस्थिति में दण्डकारण्य आन्दोलन में जनयुद्ध को आगे बढ़ाने के लिए जन मिलिशिया को बड़ी संख्या में हथियारबंद करने का कर्तव्य लिया गया है। इस लक्ष्य को पूरा करने में कामरेड

अमन की असमय मृत्यु से बड़ी बाधा खड़ी हुई है।

हालांकि जनयोद्धाओं की मौत नहीं होती। कामरेड कनकास्वामी मृत्युंजय हैं। उनके तैयार किए हथियार पीएलजीए योद्धाओं के कंधों पर सुसज्जित हैं। आपरेशन ग्रीन हंट के नाम पर क्रांतिकारी आन्दोलन को समूल रूप से खत्म करने और देश की प्राकृतिक संपदाओं को साम्राज्यवादियों तथा दलाल पूंजीपतियों के हवाले करने की मंशा से आ रहे लुटेरे शासक वर्गों का मुकाबला करने के लिए वो तैयार हैं। आज दण्डकाारण्य के मध्य, बस्तर में प्रशिक्षण के बहाने क्रांतिकारी आन्दोलन को खत्म करने के अभियान में भाग लेने आ रही भारत सेना को हराने के लिए वो हथियार अपनी भूमिका निभाएंगे। उनकी विकसित की हुई तकनीक, दी हुई शिक्षा पीएलजीए की सम्पदा का हिस्सा बन गईं। उनसे तकनीकी क्षेत्र में हथियार तैयार करने की शिक्षा पाने वाले साथी कामरेड्स, पीएलजीए योद्धा और जनता उनके अधूरे कर्तव्यों को पूरा करने के लिए तैयार हैं। उन्हें उनके आदर्श सदा प्रेरणा देते रहेंगे।

दण्डकारण्य के एक छोटे से गांव में कामरेड अमन का अंतिम संस्कार क्रांतिकारी परम्पराओं के मुताबिक किया गया। पीएलजीए योद्धाओं और जनता ने बहते आंसुओं और गुंजायमान क्रांतिकारी नारों के साथ उनको अंतिम विदाई दी। उस गांव की जनता ने कामरेड अमन को अपने बेटे की तरह अपनाया था। उन्होंने खुद अपने पूवर्जों की कब्रों के पास उनके लिए जगह का चुनाव कर उनके प्रति अपना प्यार व्यक्त किया। उनकी जीवनसंगिनी ने उनकी चिता को मुखाग्नि दी। दण्डकारण्य भर में यह शोक समाचार पंहुचते ही जहां के वहीं उनकी याद में संस्मरण सभाओं का आयोजन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उनके परिवार को दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी ने संवेदना और सहानुभूति व्यक्त करते हुए पत्र भेजा।

कामरेड अमन क्रांतिकारी आन्दोलन में तथा जनता और जन गुरिल्लों के दिलों में हमेशा के लिए अंकित होकर रहेंगे। उन्होंने अपनी लंबी क्रांतिकारी जिन्दगी में दृढ़ संकल्प के साथ काम करके जो आदर्श स्थापित किए हैं वो भावी पीढ़ी को सदा प्रेरणा देते रहेंगे। साम्राज्यवाद, सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीपति व्यवस्था को उखाड़ फेंककर मजदूर–किसान एकता के आधार पर उत्पीड़ित वर्गों की सांझी राजसत्ता की स्थापना करके, शोषण व उत्पीड़न से मुक्त नव समाज की स्थापना के लिए संघर्ष करना ही कामरेड अमन को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ★